बी. ए. द्वितीय वर्ष लॉक डाउन एवं बुजुर्गों की समस्याएं

वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुके कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा उठाए गए अनेक कदमों में से सबसे महत्वपूर्ण कदम लॉक डाउन का रहा। जिसके द्वारा लोगों को अपने घरों में रहने की सलाह दी गई। यह उल्लेखनीय है कि कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित 60 साल या उससे ऊपर के बुजुर्ग ही हैं। उम्र के इस पड़ाव में व्यक्ति वैसे ही अनेक समस्याओं से घिरा रहता है। जिसे इस लॉक डाउन ने और जटिल बना दिया है।

लॉक डाउन के चलते सबसे ज्यादा दिक्कत उन बुजुर्गों को हो रही है। जिनके बच्चे अन्य शहर या विदेश में रह रहे हैं। लॉक डाउन एवं कोरोना वायरस के संक्रमण की आशंका के चलते वह घर से बाहर नहीं जा पा रहे हैं। ऐसे में उनके लिए भोजन दवा आदि की समस्या पैदा हो रही है। केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा इसके निवारण हेतु अनेक कदम उठाए गए हैं। जैसे की आवश्यक वस्तुओं की होम डिलीवरी तथा किसी भी समस्या के लिए हेल्पलाइन नंबर उपलब्ध करा दी गई है।

पर क्या यह उपाय कारगर साबित हो रहे हैं? चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना इस समय सबसे ज्यादा जरूरी है क्योंकि कई वृद्ध जनों को लगातार डॉक्टरी परामर्श की आवश्यकता रहती है। साथ ही आर्थिक पहलू भी एक बड़ी समस्या है। बैंक में पैसे होने के बावजूद उसकी निकासी लॉक डाउन में एक बड़ी समस्या है। इसके लिए सरकार डोर टू डोर बैंकिंग सर्विस उपलब्ध करा सकती है। जो इस समस्या को काफी हद तक सुलझा सकते हैं।

इन समस्याओं के साथ ही अधिकांश बुजुर्गों की एक प्रमुख समस्या उनका अकेलापन है। उनमें भी उन बुजुर्गों के साथ यह समस्या और भी अधिक है। जो बुढ़ापे की इस दहलीज़ पर अपना साथी खो चुके हैं। क्योंकि अकेलेपन की समस्या से दोनों मिलकर आपस में अपने दुख दर्द, अपनी समस्याओं को बांट कर दूर कर लेते हैं। इसलिए वृद्धावस्था में एक साथी की भूमिका और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। लॉक डाउन के कारण इन बदलती परिस्थितियों में अधिकांश बुजुर्गों की यह समस्या और भी अधिक गंभीर हो गई है। लॉक डाउन में उनके नाते रिश्तेदार, मित्र, पड़ोसी फोन के माध्यम से लगातार उनके संपर्क में रह सकते हैं। जो उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है।

कोरोना वायरस के संदर्भ में नित नई जानकारियां सामने आ रही हैं। कोरोनावायरस ना केवल फेफड़ों को अपितु दिल के लिए भी घातक साबित होता जा रहा है। भारत जहां पर दिल के मरीजों की संख्या और देशों के मुकाबले काफी ज्यादा है। इसलिए यहां पर ऐसे बुजुर्ग जिन्हें दिल से संबंधित बीमारियां हैं। उन्हें विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। सरकार तो अपनी तरफ से प्रयास कर ही रही है। परंतु हमारा भी फर्ज बन जाता है कि इस परिस्थिति में हम उन्हें।

अवसादग्रस्त होने से बचाए। ऐसे में आस पड़ोस के लोग एवं मिलने वालों का भी यह फर्ज बनता है कि वह ऐसे बुजुर्गों की सहायता करने के लिए सामने आए। उन्हें खाने-पीने की सामग्री दवाइयां व अन्य आवश्यक वस्तुओं की होम डिलीवरी में सहभागिता दिखाएं।

ऐसा नहीं है कि लॉक डाउन के केवल दुष्परिणाम ही सामने आ रहे हैं, अपितु यह कई बुजुर्गों के लिए वरदान भी साबित हो रहा है। यही वह समय है जब उनके बेटे बहू नाती पोतों के पास भरपूर समय है। जो वह जिंदगी की भाग दौड़ में अपने बुजुर्ग मां-बाप को नहीं दे पा रहे थे। लॉक डाउन से रिश्तों के बीच की दूरियां कम हुई है। लॉक डाउन की यह अवधि ऐसे बुजुर्गों व उनके बच्चों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने का एक सुखद अवसर बन गया है।

लॉकडाउन कि इस अवधि ने हमें अपनी नींव को एक बार फिर से जानने समझने का मौका दिया है। हमें अपने घर की नींव को पहचानने का, उन्हें सहेजने का, उन्हें मजबूत बनाने का। क्योंकि रिश्तों की यह इमारत भी प्यार विश्वास के अभाव में समय के साथ खोखली पड़ने लगती है। अतः सब मिलकर अपने घरों की बुजुर्ग रूपी इस इमारत की नींव को फिर से अपने स्नेह व अपनेपन से सहेजने की कोशिश करते हैं। अपनी इस लाकडाउन की अवधि को अपने हर निर्जीव पड़ते रिश्ते की नींव को सींचते रहिए, यह एक बार फिर से जरूर मजबूती के साथ मुस्कुराएगी।

मनीषा भूषण
असिस्टेंट प्रोफेसर -समाजशास्त्र
राजकीय महिला महाविद्यालय बदायूं